ISSN -2319-8303

नवदृष्टि रिसर्च जर्नल

त्रैमासिक

NAVDRISHTI RESEARCH JOURNAL

डॉ० राममूर्ति मेमोरियल एजुकेशन सोसाइटी

विद्ययाऽमृतमश्नुते

प्रकाशक

U.P. Govt. Reg. No. - 1605

डॉ० राममूर्ति मेमोरियल एजुकेशन सोसाइटी

B 22/270 B-1, शंकुलधारा, किरहियाँ मेनरोड, खोजवाँ, वाराणसी, उ०प्र०

Scanned by CamScanner

नवदृष्टि रिसर्च जर्नल

ISSN 2319-8303

Name of Topic :Horticulture WADI as a tool for livelihood enhancement 91-103
Siyaram Kumahar, Research Scholar,Department Social work , JVBI Ladnun Nagaur (Raj.)

भारत में धर्म और राजनीति की अन्त: क्रिया : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 104-106
सोनी यादव, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान, विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय,इलाहाबाद

Effect of Naturopathy and Yogasana on patients suffering from Rheumatoid Arthritis 107-110
Uttam Nikita, Research scholar, Dept. Yoga and SOL, JVBI, Ladnun, and Pradyumna Singh Shekhawat, Head, Dept. Yoga and SOL, JVBI, Ladnun

प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था : एक ऐतिहासिक अध्ययन,(२००ई०पू० से ६००ई० तक) 111-114
वन गोपाल सिंह, शोध छात्र, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय,इलाहाबाद

''कृषि एवं पशुपालन के संरक्षण में शूद्रों का योगदान'' (वैदिक काल से गुप्त काल तक) 115-117
विजय कुमार, शोध छात्र, प्राचीन इतिहास,पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता 118-122
डॉ. विकास शर्मा, सहायक आचार्य, अहिंसा एवं शांति विभाग जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राजस्थान)
डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़, सहायक आचार्य,अहिंसा एवं शांति विभाग जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राजस्थान)

''राष्ट्रीय सुरक्षा : आई०एस०आई० का नया हथियार जाली नोट'' 123-126
डॉ० विनोद कुमार यादव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, बहादुर यादव मेमोरियल पी०जी० कालेज, भटनी, देवरिया।

सामाजिक व्यवस्था परिवर्तन के लिए आवश्यक है ''अणुव्रत अनुपालना'' 127-130
डॉ. विवेक माहेश्वरी, सहायक आचार्य, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

एक चीन सिद्धांत व अमेरिकी रणनीति 131-133
यशस्वी मिश्रा, वरिष्ठ शोध अध्येता, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

सरयूपार मैदान (उ०प्र०) में जल नियोजन एवं भूमि उपयोग 134-145
अभिषेक सिंह,शोध छात्र, भूगोल विभाग,दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

सार्क के वैश्विक राजनीतिक परिपेक्ष में 'भूटान' 146-149
अनिल कुमार यादव, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

षड्वेदाङ्ग : एक परिचय 150-154
मीना यादव,शोधच्छात्रा संस्कृत–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

भिखारी ठाकुर के नाटक 'विदेसिया' में अभिव्यक्त नारी संवेदना 155-158
रेखा कुमारी, शोधार्थी, हिन्दी विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग–पटना

पूर्वोत्तर रेलवे के कर्मियों में कार्य दशाओं के सापेक्ष कार्य–संतुष्टि : एक दृष्टि 159-166
डॉ० सुभाष कुमार गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर,वाणिज्य विभाग, महराणा प्रताप पी०जी० कालेज, जंगल धूसड, गोरखपुर

२१वीं शदी में हिन्द महासागर में भारतीय सुरक्षा के लिए बढती चुनौतियाँ 167-168
मनोज कुमार शर्मा, सहायक आचार्य, सैन्य अध्ययन विभाग पं० श्रीचन्द्र शर्मा मेमोरियल स्नातकोत्तर महाविद्यालय खैर (अलीगढ़)

Influence of Cooperative Learning on Academic Achievement 169-174
Dr. Neetu Chawla, HOD(B.Ed.), RCCV Girls College, Ghaziabad Ms. Neelam Srivastava Scholar, Mewar university, MEWAR

स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवादी चिन्तन 175-178
डा० यशवन्त सिंह,असि० प्रोफेसर (इतिहास),सरदार वल्लभ भाई पटेल महाविद्यालय, सेहगों तमनपुर, रायबरेली

लक्ष्मीबाई चरितात्मक महाकाव्य– एक अध्ययन 179-183
डॉ. हिना आसिफ, संस्कृत विभागाध्यक्ष, जय बुन्देलखण्ड महाविद्यालय कुलपहाड़ (महोबा) बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्राथमिक शिक्षा में चुनौतिया 184-187
श्री जुगेश कुमार, (असिस्टेन्ट प्रोफेसर) दयानन्द सुभाष नेशनल,महाविद्यालय,उन्नाव ।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ISSN 2319-83

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. विकास शर्मा
सहायक आचार्य
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
सहायक आचार्य
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

चेतन प्राणियों में मानव–शिशु सबसे अधिक दुर्बल होता है। जिस समय उसका जन्म होता है उस समय वह न चल–फिर सकता है, न स्वयं खा–पी सकता है और न अपनी आवश्यकताओं को दूसरों पर अभिव्यक्त ही कर सकता है। जहां अन्य पशुओं के शिशु कुछ सप्ताह अथवा कुछ माह बीतते ही हाथ पैरों से पुष्ट होकर उछलने–कूदने और शिकार करने लगते हैं, वहां मानव शिशु कितने ही वर्षों तक सर्वथा निरूपाय और पर–निर्भर बना रहता है। शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निरूपाय और पर–निर्भर मानव–शिशु सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव–जाति द्वारा अर्जित सहस्रों वर्षों के अनुभव बालक को हस्तान्तरित कर दिये जाते हैं। शिक्षा के द्वारा उसका शारीरिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है और वह आत्म–विकास के पथ पर अग्रसर होता है। शिक्षा से ही उसका सामाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता है। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि मानव के ज्ञान–विज्ञान की प्रगति में शिक्षा की प्रक्रिया सबसे अधिक आश्चर्यजनक, सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और सर्वाधिक क्रांतिकारी खोज है।[1]

जब कभी कोई राष्ट्र विदेशियों की गुलामी के विरूद्ध युद्ध छेड़ता है तो वह किसी एक स्तर पर ही नहीं होता, बल्कि सभी स्तरों पर लड़ा जाता है। धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में जाग्रति होने लगती है। नए–नए विचार सामने आने लगते हैं और विदेशियों से संघर्ष होने लगता है। ऐसा ही भारत वर्ष में अंग्रेजों की गुलामी के विरूद्ध स्वतंत्रता का युद्ध छिड़ने पर हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा प्रारम्भ की गई शिक्षा प्रणाली की तीव्र आलोचना की गई और शिक्षा दार्शनिकों ने शिक्षा सम्बन्धी ऐसी योजनाएं प्रस्तुत की जो न केवल देश के लिए बल्कि विश्व केलिए भी महत्त्वपूर्ण थी। इनमें महात्मा गांधी की शिक्षा पद्धति भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिकों में महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का उनके जीवन काल में जितना अधिक प्रचार हुआ, उतना अधिक प्रचार किसी भी अन्य समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिक के विचारों का नहीं हुआ। इसका एक बड़ा कारण यह था कि गांधी जी देश के सर्वोच्च नेता माने जाते थे और जनता में उनके विचारों का बड़ा मान था। देश को स्वतंत्रता मिल जाने के बाद स्वतंत्र भारत की सरकार ने गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया। महात्मा गांधी भारतीय संस्कृति एवं भारतीय परम्परा के एक महान पुरुष माने जाते हैं। उनका यह महान कार्य केवल दार्शनिक, चिन्तन अथवा धार्मिक मीमांसा तक ही सीमित न था वरन् वे दार्शनिक, विचारक अथवा धर्म मीमांसा से बढ़कर अपने युग के महान शिक्षा–शास्त्री भी थे। महात्मा गांधी का अविर्भाव भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। वस्तुतः इनका कार्य इतना व्यापक, विशाल तथा सारगर्भित है कि उसमें समस्त धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक मूल्यों तथा धारणाओं और विचारों का समाहार हो सकता है।

भारतवर्ष में शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित दोषों से शिक्षा को मुक्त करने तथा उसे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने की आवश्यकता पर महात्मा गांधी ने बल दिया है। वह शिक्षा का भारतीयकरण करना चाहते थे वे भारत के श्रेष्ठतम आदर्श पुरुष थे। भारत के किसी भी महापुरुष ने इतने समय में इतनी लम्बी अवधि तक कठिन संघर्षों में इतनी सच्चाई, लगन, दया, आत्मत्याग, विनय, सेवा और अहिंसा का जीवन नहीं बिताया जितना गांधीजी ने बिताया। गांधीजी का कहना है कि "जो शिक्षा चित्त की शुद्धि न करे; मन और इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाये, निर्भयता और स्वावलत्वन पैदा न करे, निर्वाह

[1]. रामनाथ शर्मा, प्रमुख भारतीय शिक्षा दार्शनिक, पृ. 12

Scanned by CamScanner

ISSN 2319-8303

न बनाये तथा स्वतंत्र रहने का हौसला और सामर्थ्य न उपजाये, उस शिक्षा में चाहे जितनी ... खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पाण्डित्य मौजूद हो वह सच्ची शिक्षा नहीं।"[2]

... गांधी ने यथार्थ ज्ञान को विद्या, तो इसके विपरीत ज्ञान को अविद्या कहा है। महात्मा ... दार्शनिक विचारों में कर्मयोग, कर्मफलवाद और आत्मा की अमरता महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रभक्ति ... उच्च आदर्श और जीवन शुद्धि का उत्कट से उत्कट जागरूक प्रयत्न के साथ एवं गुरु ... का ध्यान योग, आत्मोन्नति साधना के नये नमूने राष्ट्र के सामने पेश हुए हैं। शिक्षा का ... को समाज के अनुकूल बनाना है। मनुष्य और समाज का आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष ... से ही संभव है। शिक्षा द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है। सुख समृद्धि लाने ... शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। पाश्चात्य शिक्षा ... अनुसार बालकों को पूर्वजों के वैयक्तिक, सामाजिक और राजनैतिक अनुभवों, नियमों का ज्ञान ... है। आदर्शवादियों के अनुसार सांस्कृतिक गुणों, बौद्धिक, सौन्दर्य बोध, नैतिक अर्थात् सत्य, ... तथा धर्म में अंतिम चरण सता का बालकों को रसास्वादन कराने वाली शिक्षा है। प्रसिद्ध ... शास्त्री रूसो ने शिक्षा को प्राकृतिक जीवन के विकास की प्रक्रिया बताया है। व्यवहारवादियों ... शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में समायोजित करती है। अतः शिक्षा ... के विकास की अनवरत प्रक्रिया है।[3]

... गांधीजी के अनुसार शिक्षा वही है जो व्यक्ति को यथार्थ एवं वस्तुगत ज्ञान प्रदान करती है। इसी ... त ज्ञान को सभ्य ज्ञान की संज्ञा प्रदान होने से सभ्य ज्ञान ही वास्तविक शिक्षा है। वह ... शिक्षा पर बल देते थे। मनुष्य की आत्मा ज्ञान स्वरूप है जिसका अनावरण में अध्यापक का ... देना है। यह जीवन के साथ चलने वाली प्रक्रिया है। गांधीजी के अनुसार, "जब तक सच्चा ... नहीं आता तब तक सारी पढ़ाई बेकार है। सच्चे जीवन में बनावट की गुंजाइश नहीं है। ... को महत्त्व देना एवं शिक्षा द्वारा शक्तियों का विकास करना ही गांधीजी का उद्देश्य था।"

...–आधुनिक भारत व दूसरे बहुत से नेताओं की तरह गांधीजी ने भी राष्ट्रीय विकास के लिए ... देने की जरूरत पर जोर दिया है। उनके मतानुसार व्यक्तिगत जीवन में पवित्रता का ... के लिए श्रेष्ठ शिक्षा जरूरी है। उनका विश्वास था कि व्यावहारिक दृष्टिकोण के न रहने पर ... बेकार हो जाती है। इतिहास से अनेक मिसालें देखकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि ऐसे ... आये हैं जब किताबी शिक्षा न पाने वाले लोगों ने भी देश पर अच्छी तरह से राज किया है। ... तो यह भी थी कि केवल किताबी ज्ञान से चरित्र का निर्माण नहीं होता। गांधीजी कि शिक्षा ... सरलता या सादगी और राष्ट्र भक्ति की भावना थी। देशभक्ति की भावना का विकास करने में ... भूमिका काफी रहती है। उनका मत था कि "जो माता–पिता अंग्रेजी वातावरण में अपने बच्चों ... करते हैं वे अपने देश को धोखा दे रहे हैं। उनके शब्दों में, "वे उन्हें देश की आध्यात्मिक और ... विरासत से दूर रखकर उन्हें देश की सेवा न करने के लिए काबिल बना डालते है।" अंग्रेजी ... श्रेष्ठता को मानते हुए भी उनका कहना था कि हमें अपनी भाषा और साहित्य की अपेक्षा नहीं ... । विदेशी भाषा के जरिये शिक्षा दी ही नहीं जा सकती।

... गांधीजी मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देने के समर्थक थे। साथ ही शिक्षा इस प्रकार की हो ... समय देश की मौजूदा परिस्थितियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता हों। उसे भारतीय ... धारण किसान की जरूरतों को पूरा करना होगा। साम्राज्यवादी शोषणकर्ता के स्वार्थो को नहीं। ... तिकता और आचार सम्बन्धी नियमों का पालन करने के भी वे समर्थक थे। शिक्षा ऐसी होनी ... से दिल और दिमाग का ठीक दिशा में विकसित होकर विद्यार्थी का चरित्र ऊंचा उठाया जा ...

... गांधीजी का विचार यह भी था कि साहित्यक और तकनीकी शिक्षा में तालमेल बैठाना जरूरी है। ... रेक शिक्ष बिल्कुल शुरू से देने के समर्थक थे। ऐसी शिक्षा विद्यार्थी को अपने पैरों पर खड़ा ... थ श्रम का महत्व बढ़ाएगी। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी हो जो श्रम के द्वारा व्यक्ति का ... वाली हो जिससे देश में सभी स्वावलम्बी बन सकें और बेकारी को दूर कर दिया जाए।[4]

...कल पाण्डेय, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, पृ. 364
...ठक, शिक्षा के सिद्धान्त, पृ. 259
...क, भारतीय राजनीतिक विचारक, अर्जुन पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, पृ.सं. 122

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ISSN 2319-83

गांधीजी की शिक्षा के उद्देश्य

वर्तमान भारतीय दार्शनिक विचारधारा नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं पर आधारित है। अन्तरात्मा की आवाज सुनने, समझने एवं उसके अनुसरण की योग्यता प्रदान करना है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में स्वावलम्बन लाना है। व्यक्ति का व्यावसायिक, सांस्कृतिक, चरित्र विकास एवं सर्वांगीण विकास करना ही शैक्षिक उद्देश्य है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा का कोई एक उद्देश्य नहीं हो सकता। उन्होंने जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखा और शिक्षा को तदनुसार कई दृष्टिकोणों से देखा है।

जीविकोपार्जन

शिक्षा के लक्ष्य की व्याख्या करते हुए गांधीजी ने कहा है–"शिक्षा से मेरा तात्पर्य शिशु और मनुष्य में शरीर, मन और आत्मा जो कुछ सर्वोत्तम है उसकी सर्वांगीण अभिव्यक्ति है। साक्षरता शिक्षा का लक्ष्य नहीं है और न उससे शिक्षा प्रारम्भ ही होती है। वह तो उन अनेक साधनों में से एक है जिनसे स्त्री–पुरुष शिक्षित किए जाते हैं। साक्षात्कार स्वयं शिक्षा नहीं है।"[5] अरस्तु, गांधीजी ने अंग्रेजी सरकार द्वारा चलाई गई तत्कालीन शिक्षा योजना की कटु आलोचना की। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य स्वावलम्बन है। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक बालक–बालिका को पूर्ण रूप से स्वावलम्बी बनने की योग्यता प्राप्त होनी चाहिए। इस स्वावलम्बन में जीविकोपार्जन की योग्यता भी सम्मिलित है।

गांधीजी के शब्दों में, "शिक्षा बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिएं।"[6] इसीलिए गांधीजी ने अपनी बुनियादी शिक्षा योजना में उद्योग के द्वारा शिक्षा पर जोर दिया। वे शिक्षा के द्वारा एक आदर्श नागरिक का निर्माण करना चाहते थे। उन्होंने शिक्षा को हस्तकला और उद्योग पर केन्द्रित करने का सुझाव दिया।

चरित्र निर्माण

रूसो के समान गांधीजी ने शिक्षा को बाल–केन्द्रित माना है। शिक्षा का लक्ष्य बालक में जो कुछ सर्वोत्तम है उसका विकास है। गांधी के शब्दों में, "सच्ची शिक्षा वह है जो कि बालकों की आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक शक्तियों को विकसित और प्रोत्साहित करती है।"[7] इस प्रकार शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। एक बार गांधीजी से यह पूछा कि देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद आपकी शिक्षा का लक्ष्य क्या होगा, तो गांधीजी ने उत्तर दिया, "चरित्र निर्माण।" उन्होंने चरित्र निर्माण के साथ सर्वांग शिक्षा पर जोर दिया। कहा कि जो शिक्षा बालक के किसी एक पहलू का विकास करती है वह एकांगी शिक्षा है और एकांगी शिक्षा ही हमारी संस्कृति का सबसे बड़ा अभिशाप है। शिक्षा का लक्ष्य बालक को जानकारी देना मात्र न होकर उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। गांधीजी के शब्दों में, "मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूँ, परन्तु आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य मूल रूप से एक सामाजिक प्राणी है। यह अपनी वैयक्तिकता का सामाजिक प्रगति की मांगों के अनुरूप समायोजन करना सीख कर ही अपनी वर्तमान स्थिति पर पहुंचा है।"[8]

अहिंसा का विकास

गांधीजी ने जीवन के अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में भी अहिंसा पर जोर दिया है। वे शिक्षा और हिंसा को परस्पर विरोधी मानते हैं और शिक्षा के द्वारा एक अहिंसक समाज की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने लिखा है–"यदि भारत ने हिंसा के निषेध का निश्चय कर लिया है तो शिक्षा की यह प्रणाली उसके अनुशासन का एक अंतरंग अंग बन जाती है।[9]

गांधीजी ने तत्कालीन शिक्षा प्रणाली को कृत्रिम और अव्यावहारिक माना, क्योंकि उससे जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने में सहायता नहीं मिलती थी। प्रकृतिवाद और आदर्शवाद का समन्वय गांधी के उपर्युक्त विचारों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि उनके विचारों में प्रकृतिवाद और आदर्शवाद का अनुपम समन्वय है। प्रकृतिवादियों के समान वे रूढ़िवादी शिक्षा का विरोध करते हैं और बालक पर पाठ्यपुस्तकों का बोझ लादना नहीं चाहते। परन्तु दूसरी और मूल रूप से वे आदर्शवादी हैं, क्योंकि

---

5. महात्मा गांधी, हरिजन, 1937
6. महात्मा गांधी, हरिजन, 1937
7. महात्मा गांधी, हरिजन, 11.09.1937
8. महात्मा गांधी, हरिजन, 27.05.1937
9. महात्मा गांधी, शिक्षा पुनर्निर्माण, पृ. 66

Scanned by CamScanner

ISSN 2319-8303

...श्वर का राज्य स्थापित करना चाहते थे। वास्तव में गांधीजी ने शिक्षा का कोई लक्ष्य नहीं माना ...शिक्षा को विभिन्न पहलुओं से देखा है और इसलिये उनके अनेक लक्ष्यों की ओर संकेत किया ...के अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी गांधीजी नैतिकता पर अत्यधिक बल देते हैं। ...पर उन्होंने लिखा है, "शिक्षाका एकमात्र और सम्पूर्ण लक्ष्य नैतिकता के प्रत्यय में संक्षिप्त किया ...है।" शिक्षा का नैतिक लक्ष्य चरित्र–निर्माण है। गांधीजी ज्ञान के महत्त्व को किसी भी प्रकार से ...मानते हैं, किन्तु उनके अनुसार समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए।"[10]

...चीन भारतीय शिक्षा का लक्ष्य– उनका कहना है कि यदि आप शिक्षा के द्वारा किसी व्यक्ति के ...आनन्द और संतोष में कुछ भी वृद्धि नहीं कर सकते तो वह शिक्षा व्यर्थ है। पाश्चात्य विचारकों ...साथ प्राचीन भारतीय उपनिषदों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था। वे प्राचीन भारतीय आश्रम परम्परा ...प्रभावित थे और ब्रह्मचर्य के आदर्श को विद्यार्थी का आदर्श मानते थे। प्राचीन भारतीय परम्परा ...शिक्षा की व्याख्या करते हुये कहा गया है–"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वह है जो ...उनका मानना था कि शिक्षा वह है जो आध्यात्मिक विकास में सहायता दे, क्योंकि आध्यात्मिक ...सच्ची स्वतंत्रता है। अरस्तु, गांधीजी के अनुसार "आत्म–साक्षात्कार अपने आप में ही एक ...आदर्श है।"[11] और अन्य सब आदर्श वास्तव में उसके पूरक हैं।

... महत्त्व

...धी जी के अनुसार, हमारे कॉलेजों में समय की जो बरबादी होती है, उसके पक्ष में यह दलील ...है कि यदि कॉलेज में पढ़ने वालों में से एक भी जगदीश बोस पैदा हो सके तो हमें समय की ...की चिंता करने की जरूरत नहीं है। कोई भी जापानी अपने को इतना असहाय अनुभव नहीं ...करता हम अपने को समझते जान पड़ते हैं। गांधीजी का मानना था कि विश्वविद्यालयों को अवश्य ...बनना चाहिए। राज्य को तो केवल उन्हीं व्यक्तियों को शिक्षा देनी चाहिए, जिनकी सेवाओं की ...श्यकता है।

...गांधीजी ने कहा कि, मैं उच्चतर शिक्षा का दुश्मन नहीं हूँ, लेकिन मैं जिस रूप में वह शिक्षा दी ...है उसका दुश्मन हूँ।" गांधीजी ने उच्च शिक्षा के लिए अच्छे पुस्तकालय, अच्छी प्रयोगशाला, अच्छे ...स्थान होने चाहिए। इससे हमारे पास रसायनशास्त्रियों, इंजीनियरों तथा अन्य विशेषज्ञों की फौज ...जो अपने राष्ट्र के सच्चे सेवक होंगे।[12] गांधीजी का मानना था कि हमारे समय का अधिकांश भाग ...रोजी कमाने के लिए परिश्रम करने में जाता है। हमारे बच्चों को शुरू से ही शारीरिक श्रम के गौरव ...दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा– यदि शिक्षा को व्यापक बनाना है तो वह निःशुल्क होनी चाहिए। ...शिक्षा हमारे बच्चों को अपने ही घर में पूरी तरह पराया बना दिया। वर्तमान पद्धति की यह दुखान्त ...[13]

...शिक्षा में चुनौतियां

...शिक्षा

...व की शिक्षा के दोषों को दूर करने के लिए गांधीजी ने शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। ...शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा प्रणाली से है, जो बालकों को पुस्तकीय और अव्यावहारिक शिक्षा से ...एक मूलोद्योग पर आधारित व्यावहारिक और सर्वांगीण विकास की शिक्षा देती है। बेसिक शिक्षा ...है, अर्थात् वह बुनियादी सिद्धान्तों पर आधारित है। बुनियादी शिक्षा के मुख्य सिद्धान्त ...खित हैं–

(1) अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा– किसी भी जनतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर है कि नागरिक ...शिक्षित हैं। गांधीजी कहते थे कि जिस तरह पानी और हवा पर सबका अधिकार है और सभी ...समान रूप से उपयोग कर सकते हैं, उसी तरह शिक्षा सबके लिए सुलभ होनी चाहिए। बुनियादी ...से 14 वर्ष तक की आयु के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा सिद्धान्त माना गया है।

(2) उद्योग द्वारा शिक्षा– गांधीजी का कहना था, "वही शिक्षा पक्की हो सकती है जो किसी ...री या पैदा करने वाले काम के लिए दी जाये और उस दस्तकारी के इर्द–गिर्द अन्य सब तालीम ...सके। हस्तकौशल पर आधारित शिक्षा को स्पष्ट करते हुए गांधीजी ने कहा था 'मुख्य विचार शरीर,

---

...dhi, M.K.: To The Student, Navjivan, p. 107
...dhi, M.K.: The Evolution of Educational Theory, p. 146
...मा गांधी, हरिजन, 09 जुलाई, 1938
...दास कमरचन्द गांधी, गांधी चिन्तन, पृ. 194, सं. 1980

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

ISSN 2319-8

मस्तिष्क और आत्मा की सम्पूर्ण शिक्षा हस्तकौशल द्वारा देने का है जो कि बालक को सिखाया जाता है। बुनियादी शिक्षा में बागवानी तथा अन्य स्थानीय हस्तकौशल और उद्योग–धन्धें बेसिक शिक्षा के आधार पर बनाए जा सकते हैं।

(3) मातृभाषा द्वारा शिक्षा– बुनियादी शिक्षा में शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा रखा गया है। इस सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा था "मुझे अपनी मातृभाषा से उसी प्रकार चिपटे रहना चाहिए, जिस तरह अपनी माता के स्तनों से चिपटता हूँ, चाहे उसमें कितने ही दोष हों, वही मुझे जीवनदायक दुग्ध प्रदान कर सकती है।

(4) गांधीजी ने कहा था "स्वावलम्बन बुनियादी शिक्षा की तेजाबी जांच है।" दूसरे शब्दों में बुनियादी शिक्षा वही है जो बालकों को स्वावलम्बी बनाये और जो स्वयं आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक सभी प्रकार से स्वावलम्बी हो। शिक्षा समाप्त करके अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

दूसरे अन्य देशों के विषय में चाहें जो कुछ भी सत्य हो, भारतवर्ष में जहां पर कि 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या खेतिहर है, और अन्य 10 प्रतिशत औद्योगिक है वहाँ पर शिक्षा को केवल साहित्यिक बनाना और लड़के–लड़कियों को बाद के जीवन में हस्तकार्य के लिए अयोग्य बना देना एक अपराध है। वास्तव में मेरा विचार है कि चूंकि हमारे समय का अधिकांश भाग रोटी कमाने के लिए परिश्रम करने में व्यय होता है। इसलिए हमारे बच्चों को शैशवावस्था से ही इस प्रकार के परिश्रम का सम्मान करना सिखाया जाना चाहिए। हमारे बालकों को श्रम से घृणा करना नहीं सिखाया जाना चाहिए। हस्त प्रशिक्षण का प्रारम्भ हमारे जैसे निर्धन देश में एक दुहरा प्रयोजन सिद्ध करेगा। वह हमारे बालकों की शिक्षा का व्यय जुटाएगा और उन्हें एक ऐसा व्यवसाय सिखाएगा जिस पर वे बाद के जीवन में निर्भर हो सकते हैं, यदि वे रोजी कमाना चाहें।

उपर्युक्त लम्बे वक्तव्य से स्पष्ट है कि गांधीजी बालकों के परिश्रम के द्वारा विद्यालयों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। वे साहित्यिक शिक्षा के साथ–साथ औद्योगिक प्रशिक्षण देने का समर्थन करते थे। जहाँ एक ओर वे शिक्षा को निःशुल्क बनाना चाहते थे, वहाँ दूसरी ओर यह भी जरूरी समझते थे कि विद्यार्थी अपने परिश्रम के रूप में शिक्षा का शुल्क अदा करें क्योंकि मुफ्त की शिक्षा कभी भी उपयुक्त नहीं हो सकती। हस्तकला को शिक्षा का केन्द्र बनाने में गांधीजी का उद्देश्य यह भी था कि बच्चों द्वारा बनाई हुई वस्तुओं को बेचकर अध्यापक का वेतन और स्कूल का खर्चा निकाला जा सके। बेसिक शिक्षा में हस्तकला के केन्द्रीय स्थान के प्रति कुछ लोगों में गलत धारणाएं दिखलाई पड़ती है। ये लोग यह समझते हैं कि उससे विद्यालय कारखाने बन जाएंगे। यह धारणा सर्वथा अनुचित है क्योंकि हस्तकला से गांधीजी का तात्पर्य व्यवस्था से नहीं, बल्कि क्रिया करके सीखने से था।

भारत में बेसिक शिक्षा की प्रगति के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सरकार ने बेसिक शिक्षा की प्रगति के लिए काफी प्रयास किया है, परन्तु सरकार का सहयोग होते हुए भी बेसिक शिक्षा की प्रगति नहीं हो रही है। इसके मूल में बेसिक शिक्षा योजना में कुछ ऐसे मौलिक दोष हैं जिनके कारण इसके समर्थक भी उसे अव्यावहारिक मानते हैं। गांधीजी की शिक्षा–योजना में आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की सभी मुख्य विशेषताएं दिखलाई पड़ती है। इस दृष्टि से गांधीजी की शिक्षा योजना का मूल्यांकन करने के लिए प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, व्यवहारवाद, मनोवैज्ञानिक सत्यों पर आधारित शिक्षा, शिक्षा में का महत्त्व, संस्कार और कर्म का महत्त्व, समाजशास्त्रीय महत्त्व, देश की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा अपनाने पर जोर दिया था। इसके अलावा प्रौढ़ों व स्त्रियों को अलग से शिक्षा देने के लिए अलग को लागू किया। जिससे स्त्री व पुरुष जो बिना शिक्षा के रहे हैं उन्हें शिक्षा मिल सकें।

गांधीजी का शिक्षा दर्शन समन्वयवादी है। उसमें शिक्षा के तत्कालिक और परम लक्ष्यों में है। उसमें व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के आदर्शों का ध्यान रखा गया है। उसमें व्य विकास का सामाजिक सेवा में समन्वय किया गया है। उसमें चरित्र–निर्माण और जीविकोपार्जन समन्वय है। गांधीजी ने एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली उपस्थित की जो देश के विभिन्न ग्रामों, वर्गों सम्प्रदायों में समान रूप से लागू की जा सकती है। उनका लक्ष्य सम्पूर्ण देश को संगठित करना *शिक्षा में नयी तालीम* हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बालक–बालिकाओं सभी के लिए उपयुक्त थी अधिक उसका लक्ष्य राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना था। अनेक कारणों से गांधीजी की शिक्षा–प्रणाली कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सका किन्तु इससे समकालीन भारतीय शिक्षा–दर्शन में उसका किसी भी प्रकार से कम नहीं होता है। यदि आज परिस्थितियाँ उसके अनुकूल नहीं हैं और वर्तमानकाल में उसको अपनाया नहीं जा सकता है तो इससे उसका महत्त्व किसी भी प्रकार से कम नहीं होता।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner